गुरू घासीदास जी स्वतंत्रता समानता एकता का प्रतीक

डॉ. देवनारायण बंजारे
सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
शास. एम.एम.आर. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चांपा (छ.ग.), भारत

सारांश

भारत देश प्राचीनकाल से अपना धर्म, दर्शन का प्रभाव देखने को मिलता है। यहाँ की भौगोलिक स्थिति के अनुरूप सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अलग-अलग संस्कृति को संजोये हुए हैं। छत्तीसगढ़ पाषाणकाल एवं वैदिक काल से ऋषि-मुनियों, संत-महात्माओं का तपस्वी स्थल के रूप में ज्ञात होता है। यहाँ अनेक संत महात्मा चिंतन, मनन के लिए कर्मभूमि माने जाते रहे हैं। छत्तीसगढ़ में श्रृंगी ऋषि, कालिदास आदि ने अपने ज्ञान से छत्तीसगढ़ के धरा को सींचा, फिर भी आधुनिक समय में आमनवीय तत्वों एवं वर्चस्व स्थापित करने के लिए कुछ लोगों ने श्रम एवं भय की स्थिति में डालकर अंधविश्वास एवं रूढ़िवादी विचारधारा के लिए धर्म का सहारा लिया। समाज में इन कठिन विषम परिस्थितियाँ निर्मित होने लगे। जब सारा संसार में सामंतों, कुलीनों, अमीरों के द्वारा शोषण होने लगे चारों तरफ अंधेरा छा गया ऐसी ही स्थिति में लोग अनुभव करने लगे ऐसा कौन होगा? जो इस अज्ञानता रूपी अंधकार को प्रकाशित करने की दृढ़ इच्छा प्रकट करेगा। संसार सृष्टि का साकार रूप है। सृष्टि का प्रादुर्भाव सत्युग से है। ऐसे समय में छत्तीसगढ़ को बाह्य आडंबर, कर्मकाण्ड से मुक्ति दिलाने एवं विश्वबन्धुत्व स्थापित करने हेतु इस पावन धरा पर मानवता के प्रकाशपंुज बाबा गुरू घासीदास जी सत्य ज्ञान लेकर अवतरित हुए। जिसे सतनाम पंथ में गुरू घासीदास जी को आदिपुरूष के रूप में स्वीकार किया गया है। भारतीय धर्म एवं सभी

शाखाएं रहस्यवाद है जबकि गुरूघासीदास जी के विचारधारा-सत्य जो बौद्धिक सोच-तर्क पर आधारित है। गुरू शिष्य की आँख से अज्ञानता का पर्दा उठाते हुए समरसता का विचार विभिन्नताओं के बीच एकता की प्रतीक है।

शोध का उद्देश्य

मेरा शोध का उद्देश्य- गुरू घासीदास जी स्वतंत्रता, समानता एवं विश्व बन्धुत्व की विचार जो जनमानस तक पहँुचा है। भारतीय समाज इस समय चंद लोगों के गुलाम जीने को मजबूर थे जो अपमान व बदहाली जीवन जीने को विवश है। संकीर्ण विचारधारा पाखंडियों द्वारा जाति-पाति छुआछुत, वर्ण व्यवस्था से उखाड़ फेकने हेतु किये गये सत्य कार्यों का प्रतिफल है। गुरू घासीदास जी उपदेश दिया था- ''मनखे-मनखे एक समान''। अर्थात् मानवतावादी विचार था जो समाज में समानता स्वतंत्रता व एकता का संचार हो सके।

गुरू घासीदास जी ने विभिन्न स्थानों पर भगवान बुद्ध की तरह घुम-घुमकर लोगों को उपदेश दिया। इससे समाज में एक चेतना का अविर्भाव हुआ। गुरू के प्रयासों, प्रेरणा से लोगों को आत्मज्ञान, आत्मविश्वास पैदा हुआ। गुरू घासीदास जी ने यह अनुभव किया छत्तीसगढ़ के जन-जीवन विषमताओं से परिपूर्ण थे। इस मनोशारीरिक विभाजन ने चिरकाल तक पूर्वाग्रह को जन्म दिया, जिससे समूचे क्षेत्र की सामाजिक संरचना कमजोर हो गयी थी। तब जाति कर्म के स्थान पर जन्म से होने लगी। गुरू घासीदास ने समाज में फैली बुराइयाँ, अन्धविश्वास, छुवाछुत, जाति-पाति, अशिक्षा, शराब, मांस-भक्षण, नशा सेवन आदि को दूर करने का प्रयास किया गया। हमारे देश के सांस्कृतिक जीवन में प्रायः ऐसी शक्तियों का संघर्ष प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से निरंतर होता रहा है। एक ओर समाज अपने को सहज रूप से सुरक्षित मार्ग की ओर विकास करना चाहता है तो दूसरी ओर धर्म आदि की शक्तियों अनेक रूपों से दृष्टि को धूमिल करता है। छल प्रपंच की ताना बाना बुनता है। विदेशी इतिहासकार/लेखक-फारेस्टर (1790), ब्लन्ट (1785), कोलबुक (1799), एग्र्यू. (1820) इलियट (1855) आदि का इस दिशा में सराहनीय योगदान रहा था उल्लेखनीय है।

गुरू घासीदास ने व्यावहारिक तौर पर समानता स्वतंत्रता और न्याय के लोकतांत्रिक तरीके की शिक्षा पर बल दिया। इसलिए सामाजिक स्तर में धर्म, जाति, परिवार में कोई विभेद नहीं था। समाज में जीवन व व्यक्ति के प्रति उनका दृष्टिकोण सम आदर व पूर्ण भारतीय था। गुरू घासीदास एक संत व ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में शांति का संदेश दिया। सात्विक प्रवृत्ति, आध्यात्मिक साहस, धैर्य व प्रेम, दया, क्षमा, करूणा का भाव संचार ही मानवीय जीवन को सर्वोच्च शिखर पहुँचाया है जिससे लोग उसके पथ पर चलने की प्रेरणा लेते हैं। उसने उपदेश दिया था आत्म विजय का, सत्य और शांति का, यथार्थवाद रूप। उसने एक ऐसा समाज बनाने पर जोर दिया जिसमें नफरत, अज्ञान व स्वार्थ पर न हो। छत्तीसगढ़ का सांस्कृति इतिहास संघर्ष और समन्वय का इतिहास है। देव व दानव के संघर्ष और समन्वय की कथा आस्तिक व नास्तिक का संघर्ष और निर्गुण व सगुण का संघर्ष और समन्वय आदि का उदाहरण देखने को मिलते हैं।

भारत में अंग्रेजो के आगमन के समय छत्तीसगढ़ में नवजागरण के संचार का दूसरा चरण था उस वक्त पूरा छत्तीसगढ़ राज्य आंग्ल-मराठा के अधीन था। ये सभी नागपुर रियासत के अधीन थे। ठगी प्रथा, सती प्रथा, पिण्डारी, स्त्रीवध जैसे बुराईयाँ व्यापक रूप से प्रचलित थी। इन बुराईयों के खिलाफ गुरू घासीदास प्रबल आन्दोलन छेड़ रखा था। इसलिए गुरू घासीदास जी को भारतीय संस्कृति नवजागरण के आदि पुरूष के रूप थे। इसके पश्चात् 1858 में राजाराम मोहनराय ने ब्रम्ह समाज की स्थापना की थी, जबकि गुरू घासीदास जी ने 1820 में सतनाम पंथ की स्थापना की थी। गुरू घासीदास ने सत्यनाम के अनुयायी थे जो सत् मत मनुष्य की उस शाश्वत प्रेरणा का परिणाम है जो मानव जीवन को उसके सहज निःसर्ग और संतुलित रूप में विकसित देखना चाहता है। उसने उपदेश दिया कि देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि देना पाप है उसने कहा जड़ पत्थर की मूर्ति का पूजा छोड़कर सच्चे मन से ईश्वर रूपी सतपुरूष को ध्यान करने, सत्य को आचरण पर उतारने के लिए कहा-

परम ब्रम्ह परमेश्वर के, नइये कोई आकार,

मूर्ति के आकार मं, कहां समाही निराकार।
आत्म चेतन, मूर्ति अचेतन, कइसे होही दूनो के मेल।
आत्मा-परमात्मा के बीच मं, मूर्ति के का खेल।

छत्तीसगढ़ में बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार हुआ था। प्राचीनकाल से ही यहाँ बौद्ध धर्म के अनुयायी में, पुरातात्विक स्रोत से सिरपुर में बौद्ध विहारों की साक्षी बयां करता है इसके अतिरिक्त प्राचीन छत्तीसगढ़ की राजधानी रतनपुर तथा मल्हार, तुरतुरिया, बस्तर, सरगुजा आदि क्षेत्रों में पुरावशेष की जानकारी महत्वपूर्ण प्रमाण मिले है। कलान्तर में बौद्धों के पराजय पश्चात् सनातन धर्मी के द्वारा अछूतों जैसा व्यवहार करने लगे। समाज पथ भ्रष्ट दभित हो गया। जीवकोपार्जन और शिक्षा से बहिष्कृत यह विशाल जनसमुदाय गांव से बाहर कर दिया गया।

स्वामी अछुता नंद के शब्दों में-
सभ्य सबसे हिंद के प्राचीन है हकदार है हम।
था बनाया शूद्र हमको, थे कभी सरदार हम॥

गुरू घासीदास ने सामाजिक समानता के सिद्धांत को विकसित किया था। गुरू घासीदास के सामाजिक जीवन दर्शन में पूर्ण सामाजिक समानता का भाव उनके सात सिद्धांतों में से एक है। उनका सारा जीवन सामाजिक असमानता पर वज्रपात किया है उनका साधन का मूल आधार नैतिकता सदाचार पर बल है। उसने पर स्त्री को माता माना और उस पर हो रहे सामाजिक अत्याचारों का पूरजोर खंडन किया। समान अधिकार व सम्मान देने की बात की। उसने न केवल मानव कल्याण की बात की बल्कि पेड़-पौधे वनस्पतियों के प्रति आगाध प्रेम दिखाया उन्होंने हरे भरे वृक्षों को काटने से मना किया है।

गुरू घासीदास- बुद्ध, कबीर, गुरूनानक, संत रविदास की भांति क्रांतिकारी पुरूष थे वह सामाजिक क्रांति के अग्रदूत कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वह मानव समाज को अज्ञानता से दूर कर महान

परिवर्तन लाना चाहते थे। वह समाज में पुरातन व्यवस्था व धर्म के अंध भक्ति को उखाड़ फेंकने का कार्य मानव की समता, समानता का उद्घोष किया। गुरूघासीदास जी ने गृहस्थ जीवन व श्रम के महत्व पर बल दिया। आज पूरा भारतीय समाज उनके बताये गये पथ पर चलकर उच्च शिखर को छू रहा है। हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम का उद्गार है। इस महान धरती पर जहाँ भूमकाल की क्रांति हुई थी वहीं गुरू घासीदास ने शक्ति और समता का अमर संदेश दिया था।

संदर्भ ग्रंथसूची

1. *राजमहंत नंकेसर लाल टंडन- सतनाम धर्म ग्रंथ, 2012*
2. *राजमहंत नंकेसर लाल टंडन - गुरू घासीदास जीवन दर्शन - 2011,दिस. 2013, जन. 2014*
3. *डॉ. डी.एन. बंजारे, मुगलकाल में सामंतीय व्यवस्था 2018।*
4. *पत्रिका - सतनाम संदेश, डी.एल. दिव्याकर सम्पादक दिस. 2019*
5. *सतनामी समाज के प्रबुद्धों द्वारा लिए गये साक्षात्कार का अंश।*